संपादकीय

ईवीएम का औचित्य

आम चुनाव, 2024 के लिए मतदान की शुरुआत हो चुकी है। देश के 17 राज्यों और 7 संघशासित क्षेत्रों की 102 लोकसभा सीटों पर प्रथम चरण का मतदान हो चुका है। जनादेश का एक हिस्सा उन ईवीएम में ही दर्ज हो चुका है, जिन पर अधिकतर विपक्षी दल प्रलाप कर रहे हैं। वे दल चुनावी दौड़ में शामिल हैं, उनके सांसद और विधायक चुने जाने हैं, लेकिन वे ईवीएम पर अब भी संदेह कर रहे हैं। कांग्रेस की महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने यहां तक दावा किया है कि यदि ईवीएम में गड़बड़ी नहीं की गई है, तो भाजपा को 180 से कम सीटें मिलेंगी। यानी विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' मुगालते में है कि ईवीएम के जरिए ही जो मतदान होगा, उससे जनादेश उन्हें ही मिलने वाला है। तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, केरल, ओडिशा, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक और पंजाब आदि राज्यों में गैर-भाजपा दलों की आज भी सरकारें हैं, जो ईवीएम के जरिए ही बनी हैं। चुनावी पराजय से पूर्व राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश में भी 2018 में कांग्रेस सत्तारूढ़ हुई थी। तब भी मतदान ईवीएम के जरिए ही हुआ था। एक बार फिर यह मामला सर्वोच्च अदालत के विचाराधीन है। दो न्यायाधीशों की खंडपीठ ने फैसला सुरक्षित रखा है। दरअसल सवाल यह है कि विपक्ष इतना दोगला क्यों है? संवैधानिक व्यवस्थाओं के ही खिलाफ क्यों है? ईवीएम का इस्तेमाल छोड़ कर मतपत्रों वाले मतदान के पाषाणकाल की ओर लौटना क्यों चाहता है? हालांकि बूथ छापने, लूटने और फर्जी मतदान के उस दौर को सर्वोच्च अदालत खारिज कर चुकी है।

ईवीएम की शुरुआत कांग्रेस नेतृत्व की यूपीए सरकार के ही दौरान हुई थी। 2004 के उस दौर से लेकर आज तक करीब 340 करोड़ मतदाता अपने संवैधानिक मताधिकार का इस्तेमाल कर चुके हैं और 4 लोकसभा चुनाव ईवीएम के जरिए सम्पन्न कराए जा चुके हैं। 26 विधानसभा चुनावों और एक लोकसभा चुनाव में वीवीपैट पर्ची का भी इस्तेमाल किया जा चुका है। एक आम चुनाव में 55 लाख से अधिक ईवीएम का इस्तेमाल किया जाता है और करीब 1.5 करोड़ चुनावकर्मी मतदान प्रक्रिया में हिस्सा लेते हैं। सभी एक विशेष पार्टी के पक्षधर हो जाएं या ईवीएम का प्रोग्राम एक ही पार्टी के पक्ष में तय कर दिया जाए और इतने चुनावकर्मी एक साथ 'भ्रष्ट' हो जाएं, यह बिल्कुल भी संभव नहीं है। ईवीएम किसी लैपटॉप, कम्प्यूटर अथवा इंटरनेट नेटवर्क से जुड़ी हुई नहीं है, उसे हैक करना या छेड़छाड़ करना भी संभव नहीं है, अलबत्ता मशीन में तकनीकी खराबी जरूर आ सकती है। उस स्थिति में ईवीएम बदलने की पारदर्शी व्यवस्था है। चुनाव आयोग ने अदालत में अपना समूचा पक्ष रखा है। वीवीपैट पर्ची और वोटिंग के आपसी मिलान पर भी स्पष्टीकरण दिया है। पर्ची 7 सेकंड के लिए दिखती है। उसके बाद पर्ची मशीन में ही चली जाती है। न्यायिक पीठ को बताया गया कि पर्ची को मतदाता को देना जोखिम का काम है। इससे गोपनीयता भंग हो सकती है और बाहर निकालने पर पर्ची का दुरुपयोग भी किया जा सकता है। याचिकाकर्ता एडीआर ने मतदान और पर्ची की 100 फीसदी क्रॉस चेकिंग की मांग की है। अब चुनाव की निष्पक्षता, ईमानदारी बरकरार रहे, मतदाताओं के जेहन में लेशमात्र भी संदेह नहीं होना चाहिए और आयोग की संवैधानिक स्वायत्तता भी बनी रहे, उस संदर्भ में अदालत को निर्णय देना है। ईवीएम को लेकर अक्सर प्रलाप मचाया जाता रहा है और चुनाव आयोग को भी कटघरे में खड़ा किया जाता रहा है, यह प्रवृत्ति दुराग्रहपूर्ण है। आयोग ने ईवीएम को हैक करने या उसके सिस्टम से छेड़छाड़ करने के मद्देनजर सभी राजनीतिक दलों को आमंत्रित किया था, कुछ दल गए भी, लेकिन कोई भी आपत्ति नहीं उठा सका या गड़बड़ी को साबित नहीं कर सका।

सूचना

दैनिक सच एक्सप्रेस में प्रदेशभर के 42 जिला प्रतिनिधि व 200 से अधिक तहसील और विकासखण्ड प्रतिनिधि सेवाएं दे रहे हैं। लगभग यह सभी किसी अन्य न्यूज एजेंसी या सोशल मीडिया से भी जुड़े हुए हैं। अखबार के अलावा किसी अन्य प्लेटफार्म पर इनकी टिप्पणी या समाचार को दैनिक सच एक्सप्रेस से जोड़कर न देखा जाए।

प्रबंध सम्पादक

नक्सलवाद पर कब कसेगी नकेल?

सरकार वामपंथी अतिवाद से प्रभावित क्षेत्रों में सड़कें बनाने की योजना पर तेजी से काम कर रही है और वर्ष 2022 तक 48877 किलोमीटर सड़कें बनाने का लक्ष्य रखा गया है। वामपंथी अतिवाद से प्रभावित क्षेत्रों में संचार सेवाओं को मजबूत बनाने के लिए सरकार बड़ी संख्या में मोबाइल टावर लगाने का काम कर रही है। इसके तहत कुल 4072 मोबाइल टावर लगाने का लक्ष्य रखा गया है। निश्चित तौर पर पुलिस की दबाव बनाने की सक्रिय कार्रवाई और विकास बहुआयामी योजनाओं से नक्सली समस्या जड़-मूल से समाप्त हो सकेगी। इस समस्या के समाधान के लिए जनता का समर्थन भी जुटाना होगा।

छत्तीसगढ़ के कांकेर में सुरक्षाबलों ने 29 नक्सलियों को ढेर कर दिया। इस ऑपरेशन के लिए सुरक्षाबलों को कड़ी मेहनत करनी पड़ी है। जवान नक्सलियों के अड्डे तक पहुंचने के लिए 20 घंटे तक पैदल चले हैं। नक्सलियों के समूह को देखने के बाद पुलिस ने फायरिंग शुरू की थी। जब बंदूकें शांत हुईं, तो जंगल के फर्श पर सूखे पत्तों के बीच 29 माओवादी मृत पड़े थे। इनमें ललिता, शंकर और दूसरे कमांडर विनोद गावड़े के शवों की पहचान सबसे पहले की गई। मृतकों में पंद्रह महिलाएं भी थीं। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने नक्सलियों के खिलाफ मिली सफलता को केन्द्र और राज्य में भाजपा सरकार की उपलब्धि बताया। उन्होंने विश्वास जताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में बहुत कम समय में देश से नक्सलवाद को उखाड़ फेंका जाएगा। छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार बनने के बाद से इस अभियान को गति मिली है। नक्सली इलाकों में सुरक्षा बल कैंप लगाए जा रहे हैं। 19 के बाद इनकी संख्या 250 हो गई है। नक्सलियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में छत्तीसगढ़ पुलिस से भी मदद मिल रही है। राज्य में भाजपा सरकार बनने के बाद तीन महीने में 80 से ज्यादा नक्सली मारे गए हैं। 125 गिरफ्तार हुए हैं और 150 ने आत्मसमर्पण किया है। देश के 10 राज्यों में 70 जिलों में नक्सलवाद का प्रभाव है। इनमें सबसे ज्यादा प्रभावित राज्य झारखंड है, जहां 16 जिले हैं। वहीं छत्तीसगढ़ में नक्सल प्रभावित 14 जिले शामिल हैं। छत्तीसगढ़ में पिछले 14 सालों के भीतर 1582 नक्सली मुठभेड़ें हुई हैं।

इन मुठभेड़ों के दौरान 1452 नक्सली मारे गए हैं। इस बीच 1002 आम नागरिकों की भी मौत हुई है। वहीं इन हमलों में 1222 जवान शहीद हो चुके हैं। छत्तीसगढ़ में नई सरकार के गठन के बाद नक्सलियों को आशंका थी कि सरकार उनके खिलाफ अभियान तेज करेगी और हुआ भी ऐसा ही। राज्य की नई सरकार ने शांति का प्रस्ताव भी सामने रखा था, लेकिन नक्सल नेताओं की तरफ से इस प्रस्ताव पर कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं आई। वहीं दूसरी तरफ पुलिस और सुरक्षाबलों को बस्तर में फ्री हैंड कर दिया गया है। ऐसे में पिछले तीन महीनों में नक्सलियों को कई बड़े नुकसान उठाने पड़े हैं। अब तक जहां माओवादियों के बटालियन स्तर के नेता ही ढेर हुए थे, तो इस बार शंकर राव जैसे डिवीजन लेवल का नेता पुलिस की गोली का शिकार हुआ है। ऐसे में नक्सली प्रदेश में पूरी तरह से बैकफुट में हैं। अब लगातार सवाल किए जा रहे हैं कि आखिर कब तक छत्तीसगढ़ को इस नक्सल दंश से छुटकारा मिल पाएगा और बस्तर में खून की होली थमेगी? सरकार, सुरक्षा बलों एवं स्थानीय लोगों की संयुक्त कोशिशों का परिणाम है कि पिछले एक दशक में वामपंथी अतिवाद संबंधी

घटनाओं, मौतों और उनके भौगोलिक प्रसार में काफी कमी आई है। जहां वर्ष 2010 में वामपंथी अतिवाद से प्रभावित जिलों की संख्या 96 थी, वहीं वर्ष 2018 में प्रभावित जिलों की संख्या 60 रह गई है। वर्ष 2009 में जहां नक्सलवाद की घटनाओं और इन घटनाओं में मरने वालों की संख्या क्रमश 2258 व 1005 थी, वहीं वर्ष 2018 में यह संख्या घटकर क्रमश 833 एवं 240 रह गई। देश के जिन 8 राज्यों के लगभग 60 जिलों में यह समस्या बनी हुई है, उनमें ओडिशा के 5, झारखंड के 14, बिहार के 5, आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ के 10, मध्य प्रदेश के 8, महाराष्ट्र के 2 तथा बंगाल के 8 जिले शामिल हैं। वर्ष 2015 के बाद से नक्सलियों के 90 प्रतिशत हमले लगभग चार राज्यों- छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार और ओडिशा में हुए हैं।

माओवादियों के थिंक टैंक और प्रथम पंक्ति के नेता या तो मारे जा चुके हैं या इस विचारधारा को छोड़ चुके हैं। भारत में नक्सली हिंसा की शुरुआत वर्ष 1967 में पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग जिले के नक्सलबाड़ी नामक गांव से हुई और इसीलिए इस उग्रपंथी आंदोलन को नक्सलवाद के नाम से जाना जाता है। जमींदारों द्वारा छोटे किसानों के उत्पीडन् पर अंकुश लगाने के लिए सत्ता के खिलाफ चारू मजूमदार, कानू सान्याल और कन्हाई चटर्जी द्वारा शुरू किए गए इस सशस्त्र आंदोलन को नक्सलवाद का नाम दिया गया। यह आंदोलन चीन के कम्युनिस्ट नेता माओ त्से तुंग की नीतियों का अनुगामी था। आंदोलनकारियों का मानना था कि भारतीय मजदूरों और किसानों की दुर्दशा के लिए सरकारी नीतियां जिम्मेदार हैं। ये लोकतंत्र एवं लोकतांत्रिक संस्थाओं के खिलाफ हैं और जमीनी स्तर पर लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को खत्म करने के लिए हिंसा का सहारा लेते हैं। ये समूह देश के अल्प विकसित क्षेत्रों में विकासात्मक कार्यों में बाधा उत्पन्न करते हैं और लोगों को सरकार के प्रति भड़काने की कोशिश करते हैं। केंद्र और राज्य सरकारें माओवादी हिंसा को मुख्यत- कानून-व्यवस्था की समस्या मानती रही हैं, लेकिन इसके मूल में गंभीर सामाजिक-आर्थिक कारण भी रहे हैं। नक्सलियों का कहना है कि वे उन आदिवासियों और गरीबों के लिए लड़ रहे हैं, जिनकी सरकार ने दशकों से अनदेखी की है। वे जमीन के अधिकार एवं संसाधनों के वितरण के संघर्ष में स्थानीय सरोकारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। माओवाद प्रभावित अधिकतर इलाके आदिवासी बहुल हैं और यहां जीवनयापन की बुनियादी सुविधाएं तक उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन इन इलाकों की प्राकृतिक संपदा के दोहन में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की कंपनियों ने कोई कमी नहीं छोड़ी है। यहां न सड़कें हैं, न पीने के लिए पानी की व्यवस्था, न शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं और न ही रोजगार के अवसर। नक्सलवाद के उभार के आर्थिक कारण भी रहे हैं। नक्सली सरकार के विकास कार्यों के कार्यान्वयन में बाधा उत्पन्न करते हैं। वे आदिवासी क्षेत्रों का विकास नहीं होने देते और उन्हें सरकार के खिलाफ भड़काते हैं। वे लोगों से वसूली करते हैं एवं समांतर अदालतें लगाते हैं। प्रशासन तक पहुंच न हो पाने के कारण स्थानीय लोग नक्सलियों के अत्याचार का शिकार होते हैं।

अशिक्षा और विकास कार्यों की उपेक्षा ने स्थानीय लोगों एवं नक्सलियों के बीच गठबंधन को मजबूत बनाया है। नक्सलवादियों की सफलता की वजह उन्हें स्थानीय स्तर पर मिलने वाला समर्थन रहा है, जिसमें अब धीरे-धीरे कमी आ रही है। सरकार नक्सली चरमपंथ से निबटने के लिए बहुआयामी रणनीति अपना रही है। इसमें सुरक्षा एवं विकास से संबंधित उपाय तथा आदिवासी एवं अन्य कमजोर वर्ग के लोगों को उनका अधिकार दिलाने से संबंधित उपाय शामिल हैं। सरकार वामपंथी अतिवाद से प्रभावित क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे, कौशल विकास, शिक्षा, ऊर्जा और डिजिटल संपर्क का यथासंभव विस्तार करने के भी प्रयास कर रही है। सरकार की इस नीति के परिणामस्वरूप नक्सलियों के हौसले कमजोर हुए हैं तथा उनके आत्मसमर्पण की संख्या लगातार बढ़ रही है। विमुद्रीकरण ने भी नक्सलियों को पहुंचने वाली वित्तीय सहायता पर लगाम लगाई है और इसके बाद से अब तक 700 से अधिक माओवादियों ने आत्मसमर्पण किया है। सरकार वामपंथी अतिवाद से प्रभावित क्षेत्रों में सड़कें बनाने की योजना पर तेजी से काम कर रही है और वर्ष 2022 तक 48877 किलोमीटर सड़कें बनाने का लक्ष्य रखा गया है। वामपंथी अतिवाद से प्रभावित क्षेत्रों में संचार सेवाओं को मजबूत बनाने के लिए सरकार बड़ी संख्या में मोबाइल टावर लगाने का काम कर रही है। इसके तहत कुल 4072 मोबाइल टावर लगाने का लक्ष्य रखा गया है। निश्चित तौर पर पुलिस की दबाव बनाने की सक्रिय कार्रवाई और विकास बहुआयामी योजनाओं से नक्सली समस्या जड़-मूल से समाप्त हो सकेगी। इस समस्या के समाधान के लिए जनता का समर्थन भी जुटाना होगा।

-योगेंद्र योगी

सच वाणी

सभी आलेख लेखकों के अपने विचार हैं।
दैनिक सच एक्सप्रेस सभी विषयों पर तटस्थ था, है और रहेगा।

जम कर लड़ो नीति-न्याय की लड़ाई लेकिन ध्यान रखो-हम आपस में भाई-भाई

जीवन समाधान

महाराज
वैभव भटेले
(धर्म, अध्यात्म एवं राष्ट्रीयता के ओजस्वी वक्ता)
Mobile No.
9303139229

अपने कुर्ते के मानिंद किसी और का कुर्ता मैला है तो उसे किसी तरह धोना चमकाना और फिर पहनाना ही राष्ट्रवाद है। इसके विपरीत मैले कुर्ते पर कीचड़ उछालना उसे और मैला बनाना यही राष्ट्र विद्रोह है। अर्थात अपने कुर्ते के सामने अन्य सबको मटमैला बताने की दुर्नीति से कभी कोई समाज अथवा राष्ट्र मजबूत नहीं बन सकता। इसलिए जमकर लड़ो नीति-न्याय की लड़ाई, लेकिन ध्यान रखो- हम आपस में भाई-भाई! किसी भी शास्त्र अथवा पुराण में मानव से मानव की व्यक्तिगत लड़ाई की कहीं कोई प्रेरणा नहीं दी गई। धरती पर महाभारत और लंकाकांड से लेकर जितने भी युद्ध महायुद्ध हुए हैं वह सब धर्म और अधर्म, सत्य और असत्य, नीति और अनीति के विरुद्ध हुए हैं। जिसके पीछे इस धरती को अधर्म से बचाना अनीति और अन्याय की कोख से प्रसूत आतंक से बचाना ही मूल कारण रहा है। युद्ध की यह परंपरा जब तक चलती है शांति और सद्भाव अपना स्थान बनाये रखते हैं। आज भी बात ऐसे ही युद्ध की होती है जिसमें दो विपरीत विचार धाराओं के बीच बड़ी अनबन है। ये विपरीतता होनी भही चाहिए। नीति और अनीति के बीच संघर्ष होना ही चाहिए। लेकिन संघर्षकर्ताओं के बीच मानवीय मूल्य सदैव कायम रहना चाहिए। क्योंकि नीतिगत संघर्ष में जब भी अमानवीयता हावी होती है अनाचार भ्रष्टाचार हिंसा और आतंक पनपता है। इससे समाज संवर्धन और राष्ट्र निर्माण का जो मूल उद्देश्य है उसमें भटकाव उत। उत्पन्न हो जाता है। देश दो धड़ों में बंटने लगता है। राष्ट्र की एकता और अखंडता के तार कमजोर पड़ने लगते हैं। इससे खतरा बाहर से तो स्वाभाविक है अपने घर में ही उत। उत्पन्न हो जाता है और यह तो सर्वविदित है जहां सुमति तहां सम्पत्ति नाना। जहां कुमति तहां विपत्ति निदाना।। इसलिए विशेषकर उन महानुभावों से जो जनसेवा एवं राष्ट्रभक्ति के लिए उतावले हैं उनसे यह करबद्ध आग्रह है कि वे नीतिगत संघर्ष जमकर करें लेकिन ध्यान रखें जिसके विरुद्ध तुम्हारा युद्ध है वह भी तुम्हारा ही भाई है। तुम्हारे समग्र विकास के संकल्प में उसकी दशा और दिशा भी तो तुम्हीं को बदलनी है। इसलिए हर मर्यादा का रखो ध्यान ताकि पुष्ट हो सके भारत का संविधान और सबको मिल सके जीवन समाधान।

नवग्रहों में सूर्य का महत्व, 12 भावों में इसका प्रभाव

वैदिक ज्योतिष शास्त्र में सूर्य देव का विशेष महत्व माना गया है। सूर्य को आत्मा का कारक माना जाता है। एक ओर जहां सूर्यदेव की तीज त्योहार में विधि विधान से पूजा की जाती है। वहीं इसका ज्योतिषीय महत्व भी देखने को मिलता है। ज्योतिष शास्त्र में 12 राशियों को नौ ग्रहों (सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु) की स्थिति और चाल से प्रभावित माना जाता है। सूर्य देव को सभी ग्रहों का अधिपति माना जाता है और साथ ही सिंह राशि का स्वामित्व भी सूर्य देव को ही प्राप्त है। सूर्य और चंद्र ग्रह 2 ही ऐसे ग्रह हैं जिन्हें 1-1 राशि का स्वामित्व प्राप्त हैं बाकी अन्य ग्रह(राहु-केतु को छोड़कर) को 2 राशियों का स्वामित्व मिला हुआ है। आइए जानते हैं नवग्रहों में सूर्य का महत्व।

पौराणिक कथाओं के अनुसार सूर्य देव के पिता का नाम कश्यप है। उनकी माता अदिति है। देवताओं में भी सूर्य का खास महत्व माना गया है। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार सूर्य देव की दो पत्नियां हैं, जिनका नाम संध्या और छाया है। साथ ही शनिदेव भगवान सूर्य के पुत्र हैं। यमराज और देवी यमुना को इनकी संतान माना जाता है।

ज्योतिष में सूर्य का महत्वः सूर्य को नवग्रहों का राजा कहा जाता है। ज्योतिष में सूर्य को पिता के भाव कर्म का स्वामी माना गया है। इसलिए पिता-पुत्र के रिश्तों में लाभ के लिए सूर्य की पूजा पुत्र को करनी चाहिए। सूर्य देव की कृपा होने से कुंडली में नकारात्मक प्रभाव देने वाले ग्रहों का प्रभाव भी कम होता है।

सूर्य का 12 भाव पर प्रभाव

प्रथम भावः जिन लोगों की जन्म कुंडली में सूर्य देव पहले भाव में होते हैं, ऐसे लोग साहसी होते हैं।
दूसरा भावः इस भाव में सूर्य बैठकर व्यक्ति को स्वाभिमानी बनाते हैं।
तीसरा भावः यदि कुंडली के तीसरे भाव में सूर्य देव होते हैं, तो ऐसा व्यक्ति साहसी होता है।
चौथा भावः सूर्य चौथे भाव में हों, तो व्यक्ति अपने क्षेत्र में उच्च पद प्राप्त करता है।
पांचवां भावः सूर्य इस भाव में मिला-जुला फल प्रदान करते हैं।
छठा भावः इस भाव में सूर्य व्यक्ति को आर्थिक रूप से संपन्न बनाते हैं।
सातवां भावः इस भाव में सूर्य हो तो यह दांपत्य जीवन को प्रभावित करते हैं।
आठवां भावः इस भाव का सूर्य व्यक्ति को अचानक लाभ प्रदान करता है।
नवम भावः जन्म कुंडली के नवम भाव में सूर्य व्यक्ति को कर्मठ बनाता है।
दशम भावः सूर्य इस भाव में बैठकर अच्छा फल प्रदान करते हैं।
एकादश भावः इस भाव में सूर्य होते हैं, तो वह जातक को बुद्धिमान बनाते हैं।
बारहवां भाव : इस भाव में सूर्य बहुत शुभ फलदायी नहीं माने जाते। ऐस भाव के जातक को विदेश से अच्छा लाभ होता है।

अन्य ग्रहों का प्रभाव

सूर्य सिंह राशि का स्वामी होता है। इस राशि के लोगों पर सूर्य का खास प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा अन्य ग्रहों का भी अपना विशेष महत्व होता है। आइए उनके बारे में जान लेते हैं-

मंगल- ऊर्जा और महत्वाकांक्षा को नियंत्रित करता है। इसे मेष और वृश्चिक राशि से जोड़ा गया है।

बुध- इस ग्रह बुद्धि संचार को नियंत्रित करता है। यह कन्या और मिथुन राशि से जुड़ा होता है।

बृहस्पति- यह ग्रह ज्ञान और बुद्धि को नियंत्रित करता है। इसे धनु और मीन राशि से जोड़ा जाता है।

शुक्र- इस ग्रह का प्यार और रिश्तों से जोड़कर देखा जाता है। यह वृष और तुला राशि से जुड़ा है।

शनि- अनुशासन और जिम्मेदारी को नियंत्रित करता है। यह मकर और कुंभ राशि से जुड़ा है।

राहु- अचानक और अप्रत्याशित घटनाओं को नियंत्रित करता है। कुंभ राशि से जुड़ा है।

केतु- आध्यात्मिकता और दार्शनिक खोज को नियंत्रित करता है। यह वृश्चिक राशि से जुड़ा हुआ है।

चंद्रमा- इसे कर्क राशि का स्वामी माना गया है।

सूर्य का अन्य ग्रहों से संबंधः सूर्य केंद्रीय शक्ति और ऊर्जा का स्रोत है और उनकी सभी ग्रहों से मित्रता नहीं है। ऐसे में हम आपको सूर्य ग्रह के शत्रु और मित्र के बारे में जानकारी देंगे।

सूर्य के मित्र - बृहस्पति, बुध और मंगल
तटस्थ - चंद्रमा और केतु
शत्रु - शुक्र, राहु

वर्गपहेली 2125

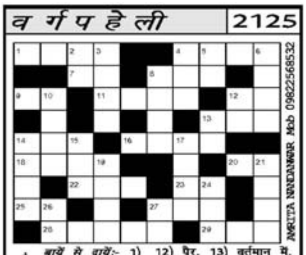

बायें से दायें:- 1) उपकार, 4) सफाई कर्मचारी, 7) अल्प, 8) महावर, 9) सीता, 11) सम्पत्ति, 12) पिता, 13) व्यसन, 14) गैर, 16) एक खेल, 18) सीमा, 20) सूर्यप्रकाश, 22) मुर्दा लपेटने का वस्त्र, 23) सौन्दर्य, 25) भस्म, 27) कतरना, 28) समान अर्थवाला, 29) खूबसूरत.

ऊपर से नीचे:- 2) वर्ष, 3) जो अभी पैदा हुआ हो, 4) बादल, 5) अम्मा, 6) खून खराबा, 8) न्यायालय, 10) स्मारक, 12) पैर, 13) वर्तमान में, 14) निराश्रित, 15) व्यर्थ, 17) नवागत सैनिक, 19) गाड़ना, 21) हैरान, 24) बचाव, 26) एक घास की सुगंधित जड़, 27) कौआ.

(उत्तरः अगले अंक में)

पिछली पहेली का उत्तर

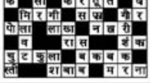

सच एक्सप्रेस पंचांग

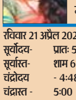

ज्योतिषाचार्य
श्रीमती सुषमा शंकरलाल पुरोहित
मोः 8823008303

रविवार 21 अप्रैल 2024
सूर्योदय- प्रातः 5:54 बजे
सूर्यास्त- शाम 6:31 बजे
चंद्रोदय - 4:48
चंद्रास्त - 5:00
शक संवत् - 1946
विक्रम संवत -2081 पिंगल
पूर्णिमांत महीना- चैत्र
पक्ष - शुक्ल
तिथि - त्रयोदशी रात्रि 1:08 तक पश्चात् चतुर्दशी
नक्षत्र - उत्तरा फाल्गुनी शाम 5:24 तक पश्चात् हस्त
योग - व्याघात देर रात्रि 3:48 तक पश्चात् हर्षण
करण - कौलव दिन 12:02 तक पश्चात् तैतिल
सूर्य राशि - मेष
चंद्र राशि - कन्या

शुभांक : 3-2-1

मेष

दिन शुभ प्रभावकारी। कार्य क्षेत्र में उन्नति कारक योग, पर थोड़ी सजगता बरतें। घर परिवार में आपसी तालमेल उत्तम। शिवजी को अक्षत अर्पित करें। शुभ अंक- 6, शुभ रंग - नीला।

वृष

दिन सामान्य। कार्य की अधिकता रहेगी। धैर्य से काम लेवे। किसी से अनावश्यक वाद-विवाद न करें, अन्यथा भविष्य में हानि सम्भव। शिवजी को जल अर्पित करें। शुभ अंक- 2, शुभ रंग - पीला।

मिथुन

भाग्य गत अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। मन मस्तिष्क उत्साहवर्धक। परिवार में उत्तम सामंजस्य, जिससे अच्छे योग संयोग सम्भव। शिवजी को मिश्री अर्पित करें। शुभ अंक - 6, शुभ रंग- नीला।

कर्क

स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। यात्रा के योग बन सकते हैं। पर अकेले यात्रा न करें। परिवार में थोड़ी गलतफहमी हो सकतीं हैं। शिवजी को अबीर अर्पित करें। शुभ अंक- 2, शुभ रंग- नारंगी।

सिंह

दिन शुभ। परिवार में आगामी मांगलिक कार्य की योजना बन सकती है। व्यापारी वर्ग के लिए दिन अच्छा। कोई डील आज कर सकते हैं। शिवजी को लाल फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 6, शुभ रंग- हरा।

कन्या

संतान क्षेत्रीय उत्तम योग। कालेज स्तरीय विद्यार्थियों को अच्छे अवसर प्राप्त हो सकते हैं। परिवार में एक दूसरे के प्रति जिम्मेदारी अच्छे से निर्वाह कर पाएंगे। शिवजी को जल अर्पित करें। शुभ अंक- 6, शुभ रंग- आसमानी।

तुला

किसी से मित्रता सम्भव, पर अत्यधिक भरोसा न करें। विद्यार्थियों को उत्तम अवसर प्राप्त हो सकते हैं। विवाह योग्य जातकों को अच्छे प्रस्ताव प्राप्ति सम्भव। शिवजी को अबीर मिश्रित जल अर्पित करें। शुभ अंक - 6, शुभ रंग- नीला।

वृश्चिक

भूमि भवन संबंधी लम्बित मामले आज आपके पक्ष में सुलझ सकतें हैं। कोई नया निवेश कर सकते हैं। शिवजी को मखाने अर्पित करें। शुभ अंक- 3, शुभ रंग- आसमानी।

धनु

भाई बहनों से सहयोग प्राप्त होगा। जिससे मन मस्तिष्क तरोताजा होगा। व्यापारी वर्ग थोड़ा सतर्क रहें। शिवजी को जल अर्पित करें। शुभ अंक- 3, शुभ रंग- हरा।

मकर

परिवार में विशेष शुभ मांगलिक कार्य सम्भव। भूमि भवन संबंधी लाभकारी योग। शिवजी को अबीर अर्पित करें। शुभ अंक- 3, शुभ रंग - पीला।

कुंभ

दिन शुभ। अचानक धन संबंधी लाभकारी अवसर। परिवार में शुभता। कार्य क्षेत्र में वरिष्ठ अधिकारियों से सहयोग प्राप्ति योग। शिवजी को मिश्री अर्पित करें। शुभ रंग- 9, शुभ रंग- लाल।

मीन

भाई बहनों से सहयोग। कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्ति योग। व्यापारी वर्ग भी लाभान्वित। विवाह योग्य जातकों को आज अच्छे प्रस्ताव प्राप्त हो सकते हैं। शिव जी को जल अर्पित करें। शुभ अंक- 1, शुभ रंग - पीला।

ग्रह स्थिति

सूर्य-कुंभ राशि में, ता. 14 के दिन 3:16 से मीन राशि में। मंगल-मकर राशि में, ता. 15 की शाम 5:54 से कुंभ राशि में। बुध-कुंभ राशि में, ता. 7 की सुबह 9:14 से मीन राशि में, ता. 25 की रात्रि11:06 से मेष राशि में। गुरू-मेष राशि में। शुक्र-मकर राशि में, ता. 7 की सुबह 11:13 से कुंभ राशि में, ता.31की शाम 5:10 से मीन राशि में।

दिशा शूल

पश्चिम दिशा में यात्रा वर्जित है। अति आवश्यक होने पर घी का सेवन कर घर से निकलें।

चौघड़िया

चर सुबह 7:30-9:00 तक
लाभ सुबह 9:00-10:30 तक
अमृत सुबह 10:30-12:00 तक
शुभ दिन 1:30-3:00 तक

अभिजीत मुहूर्त

सुबह 11:47 से दिन 12:31 तक!

सर्वार्थ सिद्धि योग

चर सुबह 9:00-10:30 तक
अमृत दिन 12:00-1:30 तक
लाभ सुबह 10:30-12:00 तक
शुभ दोपहर 3:00-4:30 तक

ता. 9 की सुबह 8:33 से रात्रि अंत तक। ता. 21 की शाम 5:24 से रात्रि अंत तक।

त्रिपुष्कर योगः ता. 16 को रात्रि 9:11 से रात्रि 2:50 तक। ता.26 को दिन 1:53 से रात्रि अंत तक।

रवि योग

1 अप्रैल की सुबह 6:15 से रात्रि 11:16 तक। ता. 11 की देर रात्रि से ता. 12 की देर रात्रि 1:42 तक। ता. 13 की प्रातः 6:02 से रात्रि 9:19 तक। ता. 14 की प्रातः 6:00 से ता. 15 की देर रात्रि 1:39 तक। ता. 17 की प्रातः 5:57 से ता. 19 की सुबह 11:01 तक। ता. 21 की प्रातः 6:02 से ता. 22 की रात्रि 8:04 तक। ता. 30 की प्रातः 4:46 से ता. 30 की रात्रि अंत तक।

पुष्य नक्षत्र : ता. 19 को रात्रि 11:07 से ता. 20 की रात्रि 12:45 तक।